आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 12 अगस्त, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

अतिवृष्टि में पशुओं की उचित देखभाल जरूरी : कुलपति

भारत एक प्राकृतिक और सामाजिक सांस्कृतिक विविधताओं वाला देश है। वृहद भौगोलिक आकार, पर्यावरणीय विविधताओं और सांस्कृतिक बहुलताओं के कारण भारत को अनेकता में एकता वाली धरती के नाम से जाना जाता है। भारत अपनी भू–जलवायु एवं सामाजिक आर्थिक विशिष्टताओं के कारण प्राकृतिक और मानव जनित आपदाओं की दृष्टि से एक अति संवेदनशील देश है। भारत का लगभग 58.6 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र कम या अधिक प्रवलता के भूकंप के लिए संवेदनशील है। सम्पूर्ण भूमि का 12 प्रतिशत भाग बाढ़ व नदियों के क्षरण से प्रभावित है तथा समुद्री सीमा का 5700 कि.मी क्षेत्र तूफान और सुनामी की दृष्टि से अति संवेदनशील है एवं कृषि योग्य भूमि का लगभग 68 प्रतिशत हिस्सा सूखे से प्रभावित है। देश के पर्वतीय क्षेत्र भूस्खलन और हिमस्खलन की दृष्टि से अति संवेदनशील है। राजस्थान देश का सर्वाधिक सूखाग्रस्त क्षेत्र है, यहां अकाल एक बड़ी समस्या है परन्तु पिछले कुछ वर्षो से राजस्थान में जलवायु परिवर्तन तथा अन्य कारणों से बाढ़ की स्थिति भी देखी गई है। बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में कोटा, जयपुर, भरतपुर संभाग के जिले आते हैं, परन्तु विगत वर्षो में पाली, जालौर, सिरोही, बाड़मेर, बीकानेर व जैसलमेर जिलों में भी बाढ़ की स्थिति बनी है। वर्तमान में मानसून का मौसम चल रहा है, कई जिलों में बाढ़ या अतिवृष्टि की स्थिति है। बाढ़ की स्थिति में लाखों लोग बेघर होते हैं। करोड़ों की फसल, पशुधन व जान–माल का नुकसान होता है। ऐसी प्राकृतिक आपदा से पशुधन, मानव जीवन व सम्पति को व्यापक नुकसान पहुंचता है। इन परिस्थितियों में पशुधन को बचाने के लिए उचित कदम उठाने की आवश्यकता रहती है। पशु प्राकृतिक रूप से तैराक होते हैं इसलिए यदि पशु बंधा हुआ नहीं है तो डूबने से बच सकता है। अधिक वर्षा व बाढ़ की स्थिति से पशुओं में रोग भी होने लगते हैं, इनमें गलघोंटू, त्वचा के रोग, न्यूमोनिया, परजीवी संक्रमण एवं खुर के रोग तथा उचित आहार न मिलने से पशुओं की उत्पादन क्षमता में कमी जैसे नुकसान होते हैं। इस मौसम में पशुचिकित्सक सामुदायिक स्तर पर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा कर पशुधन व पालतू पशुओं की निकासी को सुगम बना सकता है।

पशुचिकित्सक पैरावेट्स तथा सहायक कर्मचारियों के साथ मिलकर टीकाकरण, बीमार, घायल पशुओं का इलाज करना चाहिए तथा नियंत्रण कक्षों में पशुचिकित्सा सहायता का आदान–प्रदान और समन्वय स्थापित कर पशुओं को बचाया जा सकता हैं। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में पशुओं के लिए आपदा प्रबंधन तकनीकी केन्द्र की स्थापना की गई है जो आपदा प्रबंधन से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों तथा किसानों, पशुपालकों को आपदा प्रबंधन पर प्रशिक्षण आयोजित कर आपदा प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय का निरीक्षण

बीकानेर 27 जुलाई। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् (वी.सी.आई.) नई दिल्ली के तीन सदस्यीय प्रतिनिधि दल द्वारा 27 एवं 28 जुलाई को वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक वेटरनरी कॉलेज बीकानेर, वेटरनरी कॉलेज उदयपुर एवं पी. जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर में वी.सी.आई. न्यूनतम पशुचिकित्सा मानक 2016 के आधार पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओ, बुनियाद ढांचे एवं मानव संसाधन को सत्यापित करने हेतु निरीक्षण किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में वी.सी.आई. के प्रतिनिधि डॉ. आर. रमेश की विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टरस एवं विभागाध्यक्षों के साथ मीटिंग आयोजित की गई। मीटिंग के दौरान प्रो. गर्ग ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक एवं शोध प्रगति से अवगत करवाया और बताया कि विश्वविद्यालय के तीनों संघटक महाविद्यालये में वी.सी.आई. के मापदण्डो के अनुसार शैक्षणिक कार्य सुचारू रूप से संचालित है। वी.सी.आई. के अनुसार मानव संसाधन एवं अन्य सुविधाओं के विस्तार हेतु प्रयासरत है। पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया द्वारा तैयार "जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट उचित निस्तारण एवं प्रबंधन" फोल्डर का विमोचन भी निरीक्षण के दौरान किया गया। वेटरनरी कॉलेज नवानियां उदयपुर में डॉ. इगले संदीप विनायकराव (महाराष्ट्र) एवं पी.जी.आई. जयपुर में डॉ. कथाराजु एल. (बैंगलोर, कर्नाटक) वी.सी. आई. प्रतिनिधि के रूप में निरीक्षण किया। गौरतलब है कि निरीक्षण का प्रतिवेदन तैयार कर वी.सी.आई. नई दिल्ली को भिजवाया जायेगा। निरीक्षण के दौरान प्रो. ए.पी.सिंह, प्रो. हेमन्द दाधीच, प्रो. आर.के. धूड़िया, प्रो. प्रवीण बिश्नोई, डॉ. नीरज शर्मा व डॉ. अशोक डांगी उपस्थित रहें।

अकादमिक परिषद् की 25वीं बैठक

वेटरनरी विश्वविद्यालय की 25वीं अकादमिक परिषद् की बैठक कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग की अध्यक्षता में 24 जुलाई को आयोजित की गई। बैठक की शुरूआत में कुलपति प्रो. गर्ग ने अकादमिक परिषद् के सभी सदस्यों का स्वागत किया एवं गत बैठक के सभी बिन्दुओं पर विचार विमर्श करते हुए कार्य अनुपालना को सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया। बैठक में कुलसचिव बिन्दु खत्री द्वारा बैठक में एजेण्डे प्रस्तुत किया गया तथा अकादमिक परिषद् के सदस्यों द्वारा विभिन्न एजेन्डों का अनुमोदन किया गया। बैठक में कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि वी.सी. आई. नियमों के अनुसार वेटरनरी विश्वविद्यालय के तीनों संघटक महाविद्यालयों में पृथक से पोल्ट्री साईंस विभाग की स्थापना कर पोल्ट्री में शोध हेतु स्नातकोत्तर (पी.जी.) डिग्री शुरू की जायेगी, जिसका बैठक के सदस्यों ने अनुमोदन किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि पृथक से पोल्ट्री साइस में डिग्री मिलने से विद्यार्थियों हेतु रोजगार के अवसर भी उपलब्ध हो सकेगे तथा पोल्ट्री में शोध को भी बल मिलेगा। इसके अलावा सभी संघटक महाविद्यालयों में लाईवस्टोक फार्म कोम्पलेक्स एवं वेटरनरी क्लिनिकल कोम्पलेक्स एवं वेटरनरी कॉलेज नवानियां, उदयपुर एवं पी.जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर में पृथक से वेटरनरी बायोकेमेस्ट्री विभाग की स्थापना को भी अनुमोदन प्रदान किया गया। बैठक में स्नातकोत्तर अध्ययन रेगुलेशन–2023 के नियमों का भी अनुमोदन किया। इसके अलावा बैठक में डीन–डारेक्टर के सलेक्शन हेतु बेसिक नियम एवं स्कोर कार्ड का अनुमोदन किया गया। बैठक में पशुविज्ञान केन्द्रों पर शैक्षणिक पदों का केन्द्रवार एवं विषयवार विभाजन, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रवेश सत्र 2023–24 हेतु विश्वविद्यालय की इन्फोर्मेशन पुस्तिका, एन.आर.आई. सीटो में प्रवेश हेतु संशोधन, परीक्षा नियन्त्रक द्वारा जारी विभिन्न पाठ्यक्रमों के परीक्षा परिणाम एवं विभिन्न वार्षिक परिक्षाओं में बाह्य पर्यवेक्षको को प्रदान किये जाने वाले पारिश्रमिक भत्तों में बढ़ोत्तरी आदि अनुशंसा की गई।

पशु पोषण एवं स्वास्थ्य की अभिनव तकनीकों एवं ज्ञान पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में "पशु पोषण एवं पशु स्वास्थ्य में आधुनिक प्रचलन" विषय पर 26–28 जुलाई से ऑनलाइन मोड पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से पशुपालन संबंधित नई तकनीकों एवं नवाचारों को प्रसार कार्यकर्त्ताओं एवं फील्ड पशुचिकित्सकों के माध्यम से पशुपालकों तक पहुचाने हेतु नये आयाम मिलेंगे। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि मानव स्वास्थ्य एवं पशु स्वास्थ्य एक दूसरे के पूरक है। पशु खाद्य यदि ड्रग अवशेष, एफ्लाटोक्सिन, कीटनाशक मुक्त होगो तो पशु उत्पाद भी शुद्ध होगो, जो कि पशुपालकों को गुणवत्ता युक्त पशु उत्पादों की अच्छी आय के साथ–साथ मानव स्वास्थ्य में भी सहायक होंगे। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि तीन दिवसीय प्रशिक्षण के दौरान देश के ख्याति प्राप्त आई.सी.ए.आर. इंस्टीट्यूट एवं विश्वविद्यालयों के विषय विशेषज्ञ पशु स्वास्थ्य एवं पशु पोषण के विभिन्न विषयों पर पशुचिकित्सकों, प्रसार कार्यकर्त्ताओं वैज्ञानिकों एवं विद्यार्थियों को व्याख्यान प्रदान किया गया। राष्ट्रीय संस्थान मैनेज हैदराबाद के उप–निदेशक डॉ. साहजी फंड ने बताया कि नई तकनीकों, प्रसार विधियों की जानकारी प्रदान करने हेतु इस तरह के प्रशिक्षण कार्यक्रम देश के अन्य विश्वविद्यालय एवं आई.सी.ए.आर. केन्द्रों पर भी चलाए जा रहे है ताकि देश भर के पशुपालकों को पशुपोषण, स्वास्थ्य, विपणन आदि में नई दशा एवं दिशाओं की जानकारी प्राप्त हो सकें। डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. जागृति श्रीवास्तव एवं डॉ. सुश्रीरेखा दास इस प्रशिक्षण कार्यक्रम की सह–निर्देशिका रही। प्रशिक्षण में 160 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया।

उच्च शिक्षा में गुणवत्ता सुधार हेतु समीक्षा बैठक

उच्च शिक्षा में गुंणवत्ता सुधार हेतु वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के अध्यक्षता में 17 जुलाई को हाइब्रिड मोड पर मीटिंग का आयोजन किया गया। मीटिंग के दौरान कुलपति प्रो. गर्ग ने तीनों संघटक महाविद्यालयों में अध्यनरत पी.जी. एवं पीएच.डी. विद्यार्थियों की विभागो में नियमित उपस्थिति, शैक्षणिक कलैण्डर एवं पी.जी. रेगुलेशन अनुसार पाठ्यक्रम संचालन, शोध हेतु एडवाइजरी कमेटी का संकलन, गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य एवं अच्छी गुणवत्ता वाले जरनल में शोध पत्रों के प्रकाशनो हेतु विशेष सुझाव एवं दिशा निर्देश प्रदान किये। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि उच्च गुणवत्तापूर्ण अध्ययन एवं शैक्षणिक सुदृढ़ीकरण विद्यार्थियो के लिए आई.सी.ए.आर. एवं केन्द्रीय संस्थानो में वैज्ञानिक पदों हेतु चयन के साथ–साथ विभिन्न प्राईवेट कम्पनियों में भी उच्च पैकेज पर प्लेसमेंट एवं इन्टप्रेन्योरसिप में भी सहायक है। कुलपति ने शैक्षणिक सुधार एवं विद्यार्थियों के लिए सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु कई महत्वपूर्ण सुझाव एवं दिशा निर्देश प्रदान किये।

पौधारोपण कर दिया स्वच्छ वातावरण का संदेश

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने 30 जुलाई को महाविद्यालय परिसर में पौधारोपण कर सभी को स्वच्छ कैम्पस एवं स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया। कुलपति प्रो. गर्ग ने एरिका पाम का पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की एवं फैकल्टी सदस्यों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वेटरनरी महाविद्यालय का कैम्पस हरा–भरा एवं स्वच्छ है जो कि आस–पास के नगर वासियों के लिए एक प्राकृतिक वरदान है। वातावरण को स्वच्छ रखकर ही हम उत्तम स्वास्थ्य लाभ ले सकते है। पृथ्वी को इसके प्राकृतिक स्वरूप (हरी–भरी) में रखना भी मानव कल्याण का कार्य है। कुलपति प्रो. गर्ग ने सभी कर्मचारियों एवे विद्यार्थियों को पौधा लगाकर उसको पुष्पित एवं पल्लवित करने का संकल्प लेने को कहा। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि नीम, करंज, बकेन, एरिका पाम आदि प्रजाति के कुल 101 पौधे महाविद्यालय एवं हॉस्टल परिसर में लगाये गये।

विश्व जूनोसिस दिवस पर सेमिनार

विश्व जूनोसिस दिवस के अवसर पर पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 6 जुलाई को सेमिनार का आयोजन किया गया। वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने विश्व जूनोसिस दिवस को मनाने के उद्देश्य एवं इतिहास पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। प्रो. सिंह ने बताया कि आमजन को संक्रामक बीमारियों के प्रति जागरूक करना ही इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. आर.के. तंवर, पूर्व निदेशक क्लिनिक्स, वेटरनरी विश्वविद्यालय ने बताया कि लगभग दो सौ प्रकार की जूनोटिक बीमारिया है जो कि पशुओं से मनुष्यों में फैलती है। प्रो. तंवर ने इन बीमारियों के लक्षण दुष्प्रभाव एवं रोकथाम के तरीके के बारे में जनमानस को जागरूक करने की जरूरत बताई। निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच ने बताया कि वन हेल्थ मिशन के तहत सभी के सम्मिलित प्रयासो से ही हम संक्रामक बीमारियां पर काबू पा सकते है। इस दौरान कैनाइन वेलफेयर सोसाइटी, बीकानेर के अध्यक्ष प्रो. अनिल आहूजा, फैकल्टी सदस्य एवं विद्यार्थी मौजूद रहे।

स्कूली विद्यार्थियों के लिए जूनोसिस जागरूकता शिविर

जूनोसिस दिवस के अवसर पर पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण एवं तकनीकी केंद्र द्वारा राजकीय महारानी सुदर्शना कन्या विद्यालय में छात्राओं हेतु संक्रामक बीमारियों से बचाव हेतु जागरूकता शिविर का आयोजन 6 जुलाई को किया गया। केन्द्र की प्रभारी डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि जूनोसिस ऐसे रोग है जो जानवरों से मनुष्यों में या मनुष्यों से जानवरों में संक्रमित हो सकते है जिनसे बचाव हेतु विशेष सावधानी एवं सतर्कता बरतना आवश्यक है। डॉ. दीपिका ने बताया कि पशुओं में विभिन्न रोगों से बचाव हेतु नियमित टीकाकरण करवाया जाना जरूरी है। उन्होने छात्राओं को दूसरों को भी संक्रामक रोगों से बचाव के प्रति जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। शिविर में डॉ. देवेंद्र चौधरी, डॉ. रणवीर गोदारा, डॉ. जयंत स्वामी, राजकीय महारानी सुदर्शना कन्या महाविद्यालय, बीकानेर की प्रधानाचार्य शारदा पहाड़ीया व अन्य शिक्षणगण उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों के लिए नेत्र जांच शिविर

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में ए.एस.जी. आई. हॉस्पीटल, बीकानेर द्वारा चल दो दिवसीय मुफ्त नेत्र जांच शिविर में 19 जुलाई को विद्यार्थियों के लिए नेत्र जांच कि व्यवस्था कि गई। वेटरनरी महाविद्यालय बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि दो दिवसीय नेत्र जांच शिविर में विद्यार्थियों एवं महाविद्यालय कर्मचारियो की ए.एस. जी. हॉस्पिटल टीम द्वारा नेत्र विजन, नेत्र रोग निदान एवं सलाहकारी सेवाएं प्रदान की जा रही है तथा विद्यार्थियों को लेजर तकनीक के बारे में भी विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। बुधवार को वेटरनरी महाविद्यालय के कुल 157 विद्यार्थियों ने शिविर में नेत्र जांच का लाभ उठाया। शिविर के दौरान प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक अनुसंधान, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन उपस्थित रहे। ए.एस.जी.आई हॉस्पिटल के सत्यनारायण, कपिल चौहान, मीरा देवी एवं सलमान खान ने शिविर में अपनी सेवाएं प्रदान की।

श्वानों का हुआ रेबीज रोधी टीकाकरण

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर एवं कैनाइन वेलफेयर सोसाइटी, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में 6 जुलाई को विश्व जूनोसिस दिवस के उपलक्ष में निःशुल्क रेबीज टीकाकरण शिविर का आयोजन राजकीय पशुचिकित्सालय के सामने, पुष्करणा भवन, जस्सूसर गेट में किया गया। वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि रेबीज टीकाकरण शिविर में 54 श्वानो को रेबीज रोधी टीके लगाये गये तथा निःशुल्क टीकाकरण के टोकन वितरित किए गये। डॉ. जय प्रकाश कछावा, डॉ. तुषार, डॉ. दिलीप, डॉ. कविता, डॉ. निकी, डॉ. दिशा, डॉ. भावना एवं डॉ. चन्द्रावल ने शिविर में अपनी सेवाएं दी।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

पशु कृमिनाशन शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंर्तगत गोद लिए गॉव गाढ़वाला में 5 जुलाई को अखिल भारतीय मारवाड़ी बकरी नस्ल सुधार परियोजना द्वारा एक दिवसीय कृमिनाशन शिविर का आयोजन किया गया। परियोजना की प्रमुख अन्वेषक प्रो. उर्मिला पानू ने बताया कि शिविर के दौरान 30 पशुपालको को खनिज लवण व कृमिनाशक दवा का वितरण किया गया तथा बकरी पालन से संबधित वैज्ञानिक जानकारी प्रदान की गई। शिविर का आयोजन, परियोजना के सह–अन्वेषक डॉ. विरेन्द्र कुमार के नेतृत्व में किया गया। शिविर के आयोजन में डॉ. प्रकाश, श्यामलाल, महावीर व मोहम्मद नसीम का भी सहयोग रहा।

पौधारोपण कार्यक्रम

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसीबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 31 जुलाई को पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गाढ़वाला परिसर में बकेन का पौधा लगाकर पौधारोपण कार्यक्रम की शुरूआत की। विद्यार्थियों को पेडों का मानव जीवन में महत्व बताते हुए अपने जन्म दिवस पर एक पौधा लगाने तथा उसकों संरक्षित करने का संकल्प दिलाया। यूथ एण्ड इको क्लब की प्रभारी मंजु पालीवाल ने पौधा रोपण कार्यक्रम में सक्रिय भूमिका निभाई। इस अवसर पर विद्यालय की कार्यवाहक प्रधानाध्यापिका सुमित्रा, समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा तथा विद्यालय के शिक्षकों का भी सहयोग रहा।

विद्यार्थियों ने जाना जैव विविधता का महत्व

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र, बीकानेर द्वारा 31 जुलाई को गांव गाढ़वाला में जैव विविधता संरक्षण जागरूगता शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रभारी डॉ. मोहन लाल ने बताया कि गांव गाढ़वाला में स्कूल विद्यार्थियों को पशुजैव विविधता का महत्व, इसकी उपयोगिता और संरक्षण के बारे में जानकारी प्रदान की गई। डॉ. नरसीराम गुर्जर ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पशुधन विविधता का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान है। राजस्थान को जैव विविधता की दृष्टि से समृद्ध माना जाता है। वर्तमान परिवेश में पशु–पक्षियो एवं पादपो की कई प्रजातियां विलुप्त हो रही है अतः इनके संरक्षण की आवश्यकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल स्कूली 92 विद्यार्थियो ने भाग लिया। डॉ. नीरज कुमार शर्मा, डॉ. मिरलानी सारण, मंजु पालीवाल, मुकेश कुमार गुर्जर, यादराम खटाना आदि कार्यक्रम के दौरान उपस्थित रहे।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अगस्त, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लेक क्वाटर (बी.क्यु.)	गाय, भैंस	–	–	चूरू
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	बाड़मेर, जैसलमेर, सीकर, राजसमंद
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जोधपुर	–	–
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	गंगानगर, जयपुर	बारां, कोटा	बाड़मेर, चूरू, हनुमानगढ़, जोधपुर, उदयपुर, झालावाड़
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	–	–	बारां, भीलवाड़ा, गंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, राजसमंद
फेसिओलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	सवाईमाधोपुर, टोंक	–	–
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	चित्तौड़गढ़	अलवर, बारां, हनुमानगढ़	बांसवाड़ा, गंगानगर, जयपुर, झालावाड़, टोंक
बकरी एवं भेड़ माता रोग	भेड़, बकरी	–	–	अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, चूरू, गंगानगर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनू, जोधपुर, करोली, नागौर, उदयपुर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं
डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 6 एवं 11 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 68 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में 11, 15 एवं 25 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 22 जुलाई को गांव अमरपुरा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 162 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा दिनांक 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में तथा 10, 15, 17 एवं 21 जुलाई को गांव पला, सेंहती, सितारा एवं सैंत गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 3, 11 एवं 19 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 77 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 5, 10, 15 एवं 18 जुलाई को गांव नन्दपुरा, गैदपुरा, तोर एवं मालोनी पवार गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 118 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा .7, 10 एवं 13 जुलाई को ऑनलाइन तथा दिनांक 25 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 62 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 15, 18 एवं 26 जुलाई को गांव बरगु, कराड़िया एवं पोलाई खुर्द में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 77 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 7, 10, 14, 21 एवं 24 जुलाई को गांव बैरू, जेलियाली, इन्द्रोका, पूनिया की प्याऊ, गोयलों की ढ़ाणी गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 132 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 12, 15 एवं 18 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर 6 जुलाई को केन्द्र परिसर में तथा 10 जुलाई को गांव जामसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 159 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5 जुलाई ऑनलाइन तथा 7 एवं 10 जुलाई को गांव बोरी एवं उदयपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 80 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 5, 6, 10, 11, 12 एवं 13 जुलाई को गांव मेलूसर, बलाल, भालेरी, घमेरी, कोटवाद ताल एवं करणीसर गांवो में तथा 7 जुलाई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 7, 10, 13, 15 एवं 19 जुलाई को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 21 जुलाई को गांव नवलगढ़ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 140 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 7, 11, 14, 15, 19 एवं 21 जुलाई को गांव टिटियावास, मोरी, मुण्डोता, खातीयों का बास, जैतपुरा एवं टोडावास गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 7, 18 एवं 24 जुलाई को गांव धानसा, घासेड़ी, कोलार एवं सिकवाड़ा गांवों में तथा 3 जुलाई को ऑनलाइन आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4, 5, 6, 10, 25 एवं 27 जुलाई को गांव रामगढ़, नोहर, मुनसारी, भगवानसर. रतनपुरा एवं 24 एनटीआर गांवो में एक दिवसीय तथा 18–21 एवं 27 जुलाई को केन्द्र परिसर में चार दिवसीय एवं एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 226 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

जानलेवा गलघोंटू से पशुओं का बचाव कैसे करें

बरसात के मौसम में पशुओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए क्योंकि बरसात के मौसम में कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु एवं परजीवी सक्रिय होते हैं जिसकी वजह पशु विभिन्न प्रकार के रोगों से ग्रसित हो जाते हैं जैसे कि गलघोंटू रोग, यह रोग मानसून के समय बारिश में अत्याधिक होता है। यह रोग मुख्यतः गाय तथा भैंस में पाया जाता है तथा भैंस को गाय की तुलना में अधिक प्रभावित करता है। गलघोंटू रोग ''पास्चुरेला मल्टोसीडा नामक जीवाणु के संक्रमण से होता है। यह जीवाणु आर्द्रता और पानी से जुड़ी परिस्थितियों में लम्बे समय तक जीवित रहते हैं। यह रोग पशुओं में रोगग्रस्त पशुओं के मल–मूत्र आदि से चारागाह के प्रदूषित होने पर होता है। इस रोग में लक्षण के साथ ही इलाज न किया जाये तो एक दो दिन में ही पशु की मृत्यु हो जाती है। इस रोग में शुरूआत में तेज बुखार (107 डिग्री–एफ) आता है तथा पशु के गर्दन में सूजन के कारण सांस लेने के दौरान घर्र–घर्र की आवाज आती है एवं 12–24 घण्टें में पशु की मृत्यु हो जाती है।

लक्षणः तेज बुखार, दूध उत्पादन में अचानक कमी आना, गले, गर्दन में दर्द के साथ सूजन होना। सांस लेने में कठिनाई होना तथा घर्र–घर्र की आवाज आना, लगातार लार बहना, नाक से स्त्राव बहना, पशु के पेट में दर्द होता है, वह जमीन पर गिर जाता है तथा 24 घण्टें के भीतर पशु का उपचार न किया जाए तो पशु की मृत्यु हो जाती है।

उपचारः गलघोंटू रोग के पशुओं को एंटीबायोटिक दिया जाना चाहिए, जिसमें मेनिसिलिन, टेट्रासाइक्लिन एवं अमोक्सीसीलीन तथा सल्फर दवाइयां काफी प्रभावी है। अगर समय पर पशुचिकित्सक की सलाह पर उपचार दे दिया जाये तो पशु की जान बच सकती है।

बचाव एवं रोकथामः

- ❖ पशुओं को गलघोंटू रोग से बचाने के लिए टीकाकरण सबसे प्रभावी उपाय है। अतः हर वर्ष गलघोंटू रोकथाम का टीका अवश्य लगाना चाहिए। छः माह या उससे अधिक उम्र के पशुओं को टीका लगवाना चाहिए। यह टीका मानसून से पूर्व मई–जून में लगाना चाहिए।
- ❖ संक्रमित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिए।
- ❖ पशु आवास को स्वच्छ रखना चाहिए तथा रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशुचिकित्सक को दिखाना चाहिए।
- ❖ पशुओं को स्वच्छ पानी तथा फीड चारा उपलब्ध करवाना चाहिए।
- ❖ बीमार पशुओं को सार्वजनिक स्थल जहां पशु एकत्र होते है वहां नहीं लेकर जाना चाहिए क्योंकि यह रोग सांस द्वारा तथा संक्रमित चारा एवं पानी से होता है।

मृत पशुओं को जमीन में कम से कम 5–6 फीट गड्ढा खोदकर तथा चूना एवं नमक छिड़क कर अच्छी तरह से सावधानी पूर्वक गाढ़ देना चाहिए एवं जिस स्थान पर पशु मरा हो उसे कीटाणुनाशक दवाइयों, फिनाइल या चूने के घोल से धोना चाहिए।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

उन्नत तकनीक अपनाकर पशुपालन से आर्थिक स्थिति को बनाया सुदृढ़

भरतपुर में आनन्द नगर कॉलोनी के रहने वाले 30 वर्षीय बादशाह पुत्र अजमेरी किसान परिवार से है जिन्होनें खेती के साथ–साथ पशुपालन को अपनी आजीविका का साधन बनाया। बादशाह का परिवार शुरू से ही खेती तथा पशुपालन पर ही निर्भर थे। शुरू में केवल आवश्यकता अनुसार ही पशुपालन का कार्य किया करते थे, लेकिन पिछले लगभग 9–10 वर्षो से पशुपालन पर ही अपना ध्यान केन्द्रीत करने लगे साथ ही पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) से सम्पर्क कर केन्द्र द्वारा समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षणों में भाग लेकर वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन कर रहे हैं। दूध की उपयोगिता एवं बाजार में बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए डेयरी व्यवसाय के रूप में कार्य शुरू किया। बादशाह का कहना है कि जितनी बचत उन्हें पशुपालन से हो रही है उतनी कृषि से नहीं होती थी। वर्तमान में बादशाह के पास 10 भैंसे है जिनसे प्रतिदिन लगभग 110 लीटर दूध का उत्पादन कर रहें है तथा इनकी सालाना आय लगभग 12–14 लाख रू. हो रही है। जमीन कम होने के कारण हरा चारा तो अपने खेते में पैदा करते है, बाकि सूखा चारा (भूसा) आदि बाजार से खरीदते है। बादशाह समय–समय पर पशुपालन की उन्नत तकनीकों की जानकारी लेने के लिए पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा आयोजित कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, खनिज लवण की उपयोगिता, टीकाकरण, संतुलित पशु आहार, ग्याभिन पशुओं की देखभाल, मौसमी बीमारियों के बचाव, कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार एवं पशु बांझपन की समस्याओं के निवारण हेतु प्रशिक्षणों में भाग लेते रहते है। बादशाह पशुपालन के क्षेत्र में अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवारजनों के साथ साथ पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर को देते है तथा अन्य पशुपालकों को भी पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर से जुड़कर उच्च तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर पशुपालन व्यवसाय को आगे बढ़ाने की सलाह देते है।

सम्पर्क : बादशाह पुत्र अजमेरी
आनन्द नगर कॉलोनी, भरतपुर (मो. 9694198119)

स्वच्छ दूध उत्पादन कैसे करें ?

वर्तमान समय के बदलते परिवेश में दूध के उत्पादन में गुणवत्ता का विशेष महत्व हो गया है। भारत वर्ष विश्व में दुग्ध उत्पादन में प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है। परंतु दूध की गुणवत्ता में हम अभी भी काफी पिछड़े हुए है। अतः अब यह आवश्यक है कि दूध उत्पादन के साथ–साथ उसकी गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान दिया जावें।

स्वच्छ दूधः वह दूध जो स्वस्थ दुधारू पशु (गाय/भैंस) के स्तन का स्त्राय होता है जिसमें अच्छी प्राकृतिक सुंगध होती है व बाहरी गन्दगी से मुक्त व अत्यन्त अल्प मात्रा में जीवाणु जो कि मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होते हैं, से मुक्त होता है। ऐसे दूध को स्वच्छ दूध कहा जाता है। स्वच्छ दूध से हमारा तात्पर्य ऐसे दूध से है जिसे स्वस्थ गाय या भैंस के थन से प्राप्त किया गया हो और उसमें अच्छी खुशबू के साथ–साथ कम से कम जीवाणु हों और बाह्य पदार्थो जैसे मिट्टी, धूल, मक्खियों तथा रोगजनकों से मुक्त हो। स्वच्छ दूध की गुणवत्ता को लम्बे समय तक बनाए रखा जा सकता है तथा उसे संरक्षित करने की समयावधि भी अधिक होती है। शुद्व दूध की व्यावसायिक कीमत अधिक होती है और उससे उच्च गुणवत्ता युक्त दुग्ध पदार्थो को बनाया जा सकता है। इसलिए दूध की शुद्वता को सुनिश्चित करने के लिए दूध में होने वाली गंदगी को दुग्ध उत्पादन स्तर पर ही नियंत्रित किया जाना चाहिए, क्योंकि शुद्व दूध न केवल उपभोक्ता के लिए सुरक्षित है बल्कि दुग्ध उत्पादन की आर्थिक दृष्टि से भी फायदेमंद है।

स्वच्छ दुग्ध का उत्पादन कैसे करें : स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीकों का वर्णन करने से पहले दूध को दूषित करने वाले स्त्रोतों के बारे में पता होना आवश्यक है। दूध को दूषित करने वाले स्त्रोतों को मुख्यतः दो भागों में बांटा गया है।

आंतरिक कारकः– आंतरिक कारकों में पशु के थन से होने वाली गंदगी और थनैला रोग मुख्य है। दुहान के शुरूआती दूध में जीवाणुओं की संख्या अधिक होती है इसलिए शुरूआती एक दो छांछ को हटाना अच्छा रहता है।

बाहय कारकः– बाहय कारकों में पशु का शरीर दूध दूहने का स्थान, ग्वाला, आहार एवं पानी मुख्य है। इसके साथ–साथ दूध सग्रंहण में उपयुक्त होने वाले बर्तनों एवं उपकरणों से भी दूध के दूषित होने की सम्भावना रहती है। स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के लिए दिये गये तरीकों को अपनाया जा सकता है।

साधारणतया यह देखा गया है कि दूहारी करते वक्त तथा दूध को एक स्थान से दूसरे स्थान तक परिवहन करते समय दूध अस्वच्छ हो जाता है। दूध में मिट्टी के कण, बाल, चारे का कचरा, दाना, जीवाणु इत्यादि मिल जाते है जिससे दूध अस्वच्छ हो जाता है और दूध गर्म करने पर फट जाता है, जिससे पशुपालक भाइयों को आर्थिक हानि का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह परम आवश्यक है कि अन्य खाने की वस्तुओं की भांति दूध को भी स्वच्छ एवं बीमारियों के जीवाणुओं से रहित रखा जाए। स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए अगर पशुपालक भाई निम्न बातों बातों पर ध्यान देवें तो स्वच्छ दूध का उत्पादन कर आर्थिक हानि से बच सकता है।

पशु का स्वास्थ एवं सफाई

- ❖ स्वच्छ दूध उत्पादन के लिए दुधारू पशु स्वस्थ होना चाहिए। पशु किसी भी बीमारी से ग्रसित नहीं होना चाहिए।
- ❖ दुधारू पशु को निश्चित अवधि के पश्चात पशुचिकित्सक को अवश्य दिखाना चाहिए।

- ❖ दुग्धशाला में ले जाने से पहले पशु के शरीर की सफाई कर लेनी चाहिए। विशेषकर पशु के शरीर का पिछला व निचला भाग।
- ❖ पशुओं को संक्रामक बीमारियों जैसे खुरपका, मुंहपका, टीबी और थनैला के प्रति नियमित जांच होनी चाहिए। जो पशु बीमारियों से ग्रसित हो उनको अलग रखना चाहिए।

दूध दूहने वाले मनुष्य का स्वास्थ एवं सफाई

- ❖ पशुपालक किसी भी बीमारी से ग्रसित नहीं होना चाहिए।
- ❖ दूध व्यवसाय में लगे पशुपालक की डाक्टरी जांच एक निश्चित अवधि के पश्चात होनी चाहिए।
- ❖ दूहारी के समय पशुपालक के हाथ साफ होने चाहिए।

पशुशाला की सफाई एवं बनावट

- ❖ पशुशाला स्वच्छ तथा खुली होनी चाहिए।
- ❖ दूहारी करने से करीब डेढ़ घण्टे पहले पशुशाला की सफाई होनी चाहिए।
- ❖ पशुशाला की दीवारों पर समय–समय पर सफेदी करनी चाहिए।
- ❖ पशुशाला की बनावट अच्छी होनी चाहिए।

दूध दूहने वाले बर्तन की बनावट तथा उसकी सफाई

- ❖ दूध दूहने वाले बर्तन सदैव ही एक चादर के होने चाहिए।
- ❖ दूध के बर्तनों को पूर्णरूप से निर्जलीकरण कर लेना चाहिए।
- ❖ दूध के बर्तनों को गुनगुने पानी से धोकर गर्म पानी में सोड़ा डालकर ब्रुश से रगड़कर धोना चाहिए तथा स्वच्छ पानी से धोना चाहिए।
- ❖ धोने के बाद बर्तनों को उल्टा रखकर धूप में अच्छी तरह सूखा देना चाहिए।

पशुशाला से दूध हटाने का समय

- ❖ दूहारी के तुंरत पश्चात दूध को स्वच्छ स्थान पर रख देना चाहिए।
- ❖ यदि गर्म करने में समय लगे तो दूध को ठंडे स्थान पर भंडारण करना चाहिए।

उपरोक्त बातों पर अगर पशुपालक भाई ध्यान देवें तो स्वच्छ दूध का उत्पादन कर सकते हैं।

डॉ. विनय कुमार एवं डॉ. प्रमोद कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

पोषण की नवीन तकनीकों को अपनाकर लाभ कमायें पशुपालक

देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में मवेशियों जैसे बड़े जुगाली करने वाले पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान है। डेयरी व्यवसाय मुख्यतः तीन कारकों जैसे पशु की नस्ल, पशु प्रबंधन एवं पशु पोषण पर निर्भर करता है। दुधारू पशुओं की विकास दर एवं उत्पादकता वृद्धि में पशु पोषण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दुधारू पशुओं पर होने वाले कुल खर्च में से 70 प्रतिशत भाग अकेले उसके आहार पर होता है जिससे पशु के खाद्य प्रबंधन का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। अतः पशुओं को संतुलित आहार देना अत्यन्त आवश्यक है इसलिए पशुओं को उनके शरीर की आवश्यकताओं के अनुसार वैज्ञानिक रूप से राशन उपलब्ध कराना चाहिए। जुगाली करने वाले पशु (गाय, भैंस, बकरी, भेड़) कम पौष्टिक आहार जैसे–घास व चारे को दूध व मांस जैसे उत्तम पौष्टिक आहार में परिवर्तन करने की क्षमता रखते हैं। गौ पशुओं के रूमन में सूक्ष्मजीव कम गुणवत्ता वाले पोषक तत्वों जैसे यूरिया, कई अखाद्य पदार्थ व रेशों को उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन व ऊर्जा में परिवर्तित कर देते हैं। इसलिए वैज्ञानिक भाषा में कहा गया है कि सूक्ष्मजीवों की आपूर्ति करना पशु के लिए पोषण तत्वों की आपूर्ति करना ही है। संतुलित आहार के साथ–साथ पशुपालक को पोषण की नवीन तकनीके जैसे– यूरिया मोलासेज मिलरल्स ब्लॉक, यूरिया उपचारित चारा, सम्पूर्ण आहार ईंट, बाइपास प्रोटीन व बाइपास फैट पशुओं को उपलब्ध करानी चाहिए। यूरिया मोलासेज मिनरल ब्लॉक पशुओं को ऊर्जा, प्रोटीन और खनिज तत्वों को आसानी से उपलब्ध कराने का बेहतर स्त्रोत है। हरे चारे की कमी व अकाल के समय यूरिया मोलासेज ब्लॉक बहुत ही उपयोगी होती है। यूरिया तकनीक से उपचारित चारा प्रोटीन व ऊर्जा का स्त्रोत है तथा चारा नरम होने के कारण पशु बड़े चाव से खाते है। अधिक दूध देने वाले पशुओं को उच्च गुणवत्ता युक्त प्रोटीन व ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ऊर्जा तथा प्रोटीन का अभाव होने पर पशु देर से ताव में आते है तथा दूध भी कम देता है। इस समय बाइपास प्रोटीन तथा बाइपास फैट खिलाना चाहिए। इस प्रकार ब्यांत के बाद अथवा अधिक दूध देने वाले पशुओं को बाइपास फैट खिलाकर ऊर्जा की कमी को दूर किया जा सकता है। पशुओं के आहार में प्रजनन के 10 दिन पहले से लेकर ब्यानें के 90 दिनों तक प्रतिदिन 100 से 150 ग्राम प्रत्येक पशु को खिलाना चाहिए। अतः पशुपोषण की नवीन तकनीकों को अपनाकर पशुपालक पशुओं को स्वस्थ व उत्पादनशील रख सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया